'ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार'
-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

कोल्हापूर
NAAC Reaccredited 'A'
with CGPA -3.24 (in 3rd cycle)

ISSN : 2281-8848

VIVEK
RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

A Special Issue on

Indian Council of
Social Science Research
SPONSORED

विमुक्त और घुमंतू जन समुदाय : दशा और दिशा
(भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में)

March, 2022

Scanned with CamScanner

ISSN : 2581-8848

VIVEK RESEARCH JOURNAL

A Biannual Peer Reviewed National Journal of Multi-Disciplinary Research Articles

Editor in Chief & Published

Dr. R. R. Kumbhar

Principal-Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)
E-mail : editorvivekresearchjournal@gmail.com

Executive Editor

Dr. P. A. Patil

Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)
E-mail : prabhapatil21@gmail.com

Editorial Board

Dr. M. M. Karanjakar
Professor and Head
Dept. of Physics
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. S. M. Joshi
Asst. Professor
Dept. of English
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. K. A. Undale
Asst. Professor
Dept. of Chemistry
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. T. C. Gaupale
Asst. Professor
Dept. of Zoology
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. V. B. Waghmare
Asst. Professor & Head
Dept. of Computer Science
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. S. R. Kattimani
Asst. Professor
Dept. of History
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. A. S. Mahat
Asst. Professor & Head
Dept. of Hindi
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. R. Y. Patil
Asst. Professor
Dept. of Computer Science
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. Pradip Patil
Asst. Professor
Dept. of Marathi
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. Neeta Patil
Librarian
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Advisory Board

Prin. Abhaykumar Salunkhe
Executive Chairman
Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha,
Kolhapur.

Prin. Mrs. Shubhangi Gavade
Secretary,
Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha,
Kolhapur.

Prin. Dr. Ashok Karande
Former Jt. Secretary (Administration)
Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha,
Kolhapur.

Dr. Rajan Gavas
Former Head, Dept. of Marathi,
Shivaji University, Kolhapur.

Dr. D. A. Desai
Former Head,
Dept. of Marathi,
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. M. S. Jadhav
Former Head,
Dept. of Hindi
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)

Dr. Namita Khot
Director, Barr. Balasaheb Khardekar
Knowledge Resource Centre, Kolhapur

Scanned with CamScanner

इंडियन कॉउंसिल ऑफ
सोशल साइंस रिसर्च (ICSSR) प्रायोजित

विशेष अंक
मार्च, 2022

विमुक्त और घुमंतू जन समुदाय: दशा और दिशा
[भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में]

अतिथि संपादक
डॉ. आरिफ महात

संपादक मंडल सदस्य
डॉ. दीपक तुपे
डॉ. प्रभावती पाटील
डॉ. प्रदीप पाटील

Scanned with CamScanner

संपादकीय

भारत देश को स्वतंत्रता दिलाने में सभी का योगदान रहा है। इसे नकारा नहीं जा सकता। घुमंतू समुदाय ऐसा ही एक समाज है जो अपने लढाऊ प्रवृत्ती के कारण अंग्रेजों को नाकों तले चने चबवाया है। इस समुदाय ने अपने तरफ से देश को स्वतंत्रता दिलाने में सहयोग दिया है लेकिन आज भी यह समाज मुख्य धारा से पिछड़ा हुआ है।

घुमंतू का शाब्दिक अर्थ है, 'घुमक्कड़' जो बिना कारण इधर-उधर घूमे। घुमंतू जनजाति के संदर्भ में घुमंतू का अर्थ जाने तो वो विशेष जाति जिनका कोई स्थायी निवास नहीं होता और आजीविका की तलाश में वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमा करते हैं और घूमना इनका शौक नहीं विवशता है। इसी के संदर्भ में हमारे देश में आज घुमंतु, अर्ध-घुमंतू, विमुक्त जनजातियों में लगभग 840 जातियां है, जिनमें भारतीय समाज का सर्वाधिक उपेक्षित और पिछड़ा वर्ग है कालबेलिये, नट, भांड, पारधी, बहुरूपिये, सपेरे, मदारी, कलंदर, बहेलिये, भवैया, बणजारे, गुज्जर, गाड़िया लुहार, सिकलीगर, कुचबंदा, रेबारी, बेड़िया, नायक, कंजर, सांसी जैसी सैंकडो जातियाँ आती हैं।

सन 1871 में अंग्रेजी हुकूमत के दौरान क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट के तहत बहुत सारी लडाकू जनजातियों को क्रिमिनल ट्राइब या अपराधी जनजातियों के रूप में सूचीबद्ध किया गया था। भारत मे इन जनजातियों को जन्मजात अपराधी घोषित किया गया था। स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी करनेवाली इन समुदायों की संतानों को भी जन्मजात अपराधी के श्रेणी मे रखा गया था। भारत देश को स्वतंत्रतातो 15 अगस्त 1947 मिली लेकिन अँग्रेजो द्वारा गोपी गयी इन समुदाय की गुलामी 31 अगस्त 1952 को समाप्त हुई। सन् 1952 तक अंग्रेजी कानून के तहत इन्हें जन्मजात अपराधी माना जाता था अब ये आदतन अपराधी माने जाने लगे मगर उनके नाम के आगे विमुक्त शब्द जुड गया जीससे पता चले की ये अपराधी समुदाय से जुड़े लोग हैं। विडंबना यह है कि अंग्रेजो द्वारा प्रचलित पूर्वाग्रह के आधार पर इन विमुक्त जनजातियों को आज भी सामान्य जन या अभिजात वर्ग द्वारा अपराधीक प्रवृत्ति का माना जाता है।

भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार घुमंतू जनजातियों की आबादी 15 करोड है। क्रिमिनल ट्राइब एक्ट के कारण ये कलंकित जीवन जीने के लिये मजबूर हैं, जिसके कारण ये कहीं अपना घर बसा नही पातें। समाज के द्वारा मुख्य धारा में समाहित न हो पाने के कारण और जीवन के मूलभूत सुविधाओं की पूर्ती के अभाव में ये असामाजिक कार्यों से जुड़ जाते हैं। इस समुदाय की स्त्रियों की स्थिति इस से भी बदतर है। ये अपने आप को, बच्चों को जीवित रखने के लिए बेड़नी, नचनिया, देह व्यापार जैसा काम कर अपमानित जीवन जीने के लिए मजबूर हैं।

वर्तमान दौर में अस्मिता मूलक विमर्श के अंतर्गत साहित्य में विमर्श के बहाने उपेक्षित जनजीवन को साहित्य में स्थान दिया जा रहा है। दलित, आदिवासी, स्त्री, किन्नर आदि समाज जीवन साहित्य में चित्रित किया गया है। अब तो साहित्य में घुमंतू जनजातियों पर भी बहुत मात्रा में भारतीय भाषाओं में साहित्य का निर्माण हो रहा है जिसमें हिंदी, मराठी तमिल, बंगला आदि प्रमुख भाषाओं में आत्मकथा, उपन्यास, कहानी,कविता आदि विधाओं के माध्याम से घुमंतू जन जातियों का वास्तविक चित्रण किया गया है। इस अंक के द्वारा विमुक्त और घुमंतू समुदाय की दशा की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करना हमारा प्रयास रहा है। प्रस्तुत अंक में विमुक्त और घुमंतू समुदाय की दशा और दशा पर विविध शोधकर्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। इन सभी शोधकर्ताओं का मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

अतिथि संपादक
डॉ आरीफ महात।

Scanned with CamScanner

VIVEK RESEARCH JOURNAL

VIVEK RESEARCH JOURNAL is a Multi-Disciplinary research journal, published biannually in English, Hindi & Marathi languages. All research papers submitted to the journal will be double bind peer reviewed, referred by the members of the review committee and editorial board. The articles recommended by the peer review committee shall only be published.

Disciplines Covered :

- Arts, Humanities and Social Sciences.
- Commerce/Management/Accountancy/Finance/Business/Administration.
- Physical Education & Education.
- Computer Application/Information Technology
- Physics, Chemistry, Botany, Zoology, Microbiology, Agriculture, Biotechnology
- Library Science
- Law

Guidelines for Contributors

- Articles submitted for the journal should be original research contributions and should not be under consideration for any other publication at the same time. A declaration is to be made by the author in the covering letter for that, along with full contact details with e-mail and mobile number.

- The desired length of the research paper should be of maximum 4000 words in English/Marathi/Hindi with an abstract of not more than 75 to 100 words. At least 5 key words and bibliography must be provided for indexing and information retrieval services.

- All the manuscripts should be typed in a single space with 12 point font for English & 14 point for Marathi & Hindi, on crown size paper with 1 inch margin on all sides.

- A hard copy of the Marathi/Hindi Articles in **ISMDVB_TT Dhruv Font or Shree Lipi Devratna Font** & a hard copy of the English articles in Times New Roman font in Word format (MS Word) should be sent to the editor. Please send the font in which you have typed the article in the soft copy. The contributors can e-mail their articles to **editorvivekresearch@gmail.com.**

- Contributors should bear article review charges of Rs. 500/- which is not refundable. The charges may be sent by DD in favour of **Editor, Vivek Research,** Journal Payable at Kolhapur.

Scanned with CamScanner

Indian Council of
Social Science Research

विमुक्त और घुमंतू जन समुदाय : दशा और दिशा
(भारतीय साहित्य के परिप्रेक्ष्य में)

Scanned with CamScanner